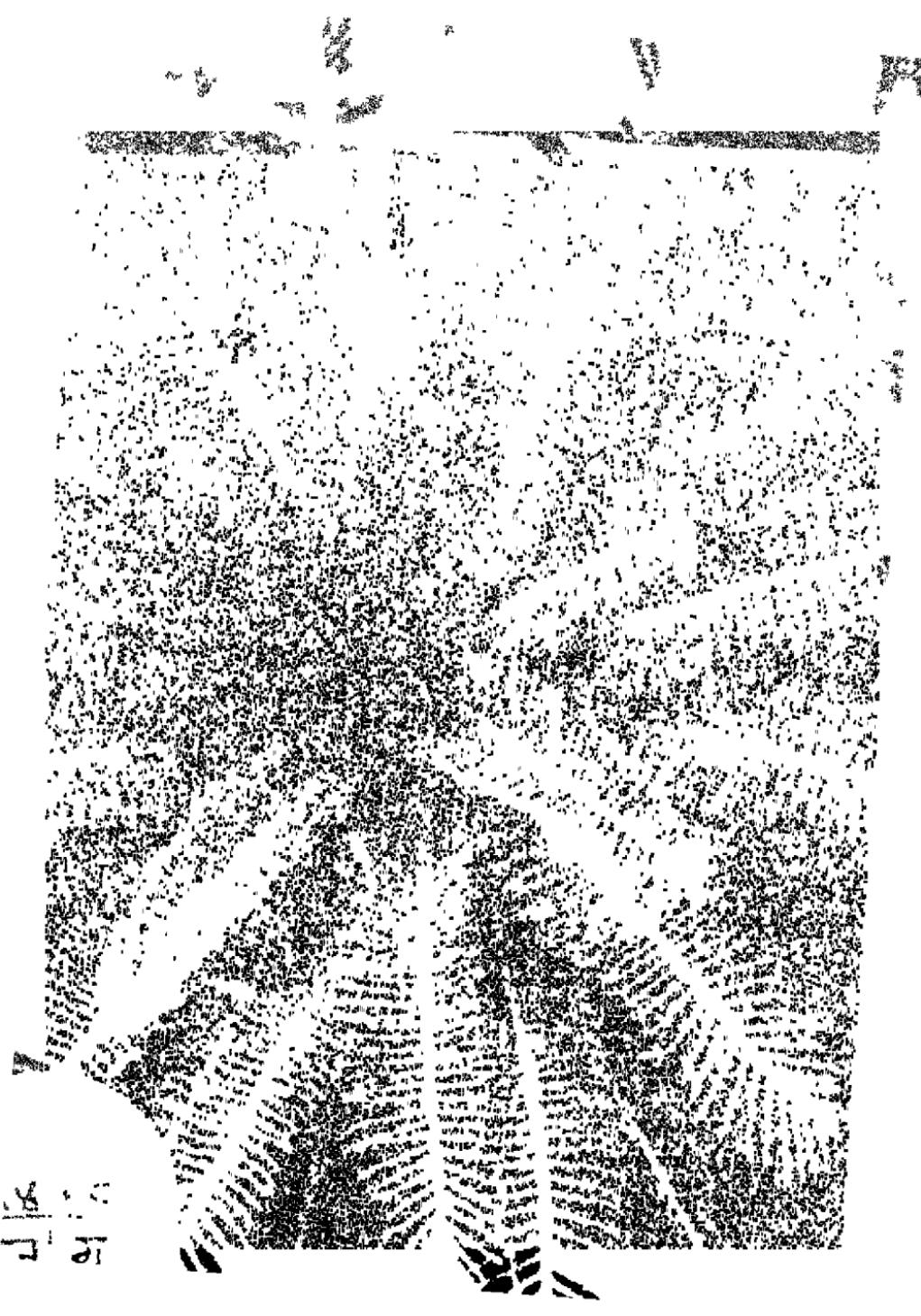


हिन्दुस्तानी एकेडॉमी, पुस्तकालय  
इलाहाबाद

बर्ग संख्या ..... ८१६.८ .....  
पुस्तक संख्या ..... बाल/न-४ .....  
क्रम संख्या ..... ३५.५.३४ .....



२०१५-१६

# गद्य कल्प

( दीर्घकालीन कृति-विधाओं का संकलन )

श्री ब्रजमोहन गुप्त 'इन्द्रनारायण'



कमलेश्वर प्रकाशन

गणश चौक छि (म०प्र०)



Все эти факторы, в конечном итоге, определяют то, что в дальнейшем будет предпринято для улучшения производительности труда. Важно помнить, что не всегда можно предвидеть, каким образом будут внесены изменения в производственный процесс. Поэтому необходимо учесть все возможные факторы, чтобы избежать нежелательных последствий.

प्रथम संस्करण : १९८८

प्रकाशक :

साहित्यवाणी,  
२८ पुराना अल्लापुर, इलाहाबाद।

आवरण एवं संज्ञा :

अशोक सिंहरथ

संपादक : लक्ष्मीनारायण दुड़े

Edition 1988

मूल्य : रु०६००.००

सम्पूर्ण ग्रंथावादी

मुद्रक :

पियरसेस प्रिंटर्स,  
बाई का बाग, इलाहाबाद।

गिलबंदी :

षिश्वनाथ बुक बाइंडर्स,  
बैरहना, इलाहाबाद।

BALKRISHNA SHARMA 'NAVIN' GADYA RACHANAVALI  
Published by SAHITYAVANI, 28, Purana Allahapur, Allahabad

Edited by L.N. Dubey  
Price Per set Rs. 600

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग, नई दिल्ली, के आंशिक वित्तीय सहयोग से प्रकाशित

साहित्यवाणी

गालकृष्ण शर्मा  
नवीन  
तात्र रचनावली

Digitized by srujanika@gmail.com

**Pratap**  
*Indi Daily.*

P. O. Box 51,  
Cawnpore, 7 March 1934.

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ ।



एम०एन० राय, डॉ. जवाहर लाल रोहतसी के साथ  
नवीन जी अपने मित्र हरीशकर विद्यार्थी,

The Pratap Office  
CAWNPORE.

'प्रताप' कार्यालय  
कानपुर

19/2/40

My dear Krishna,  
your letter.

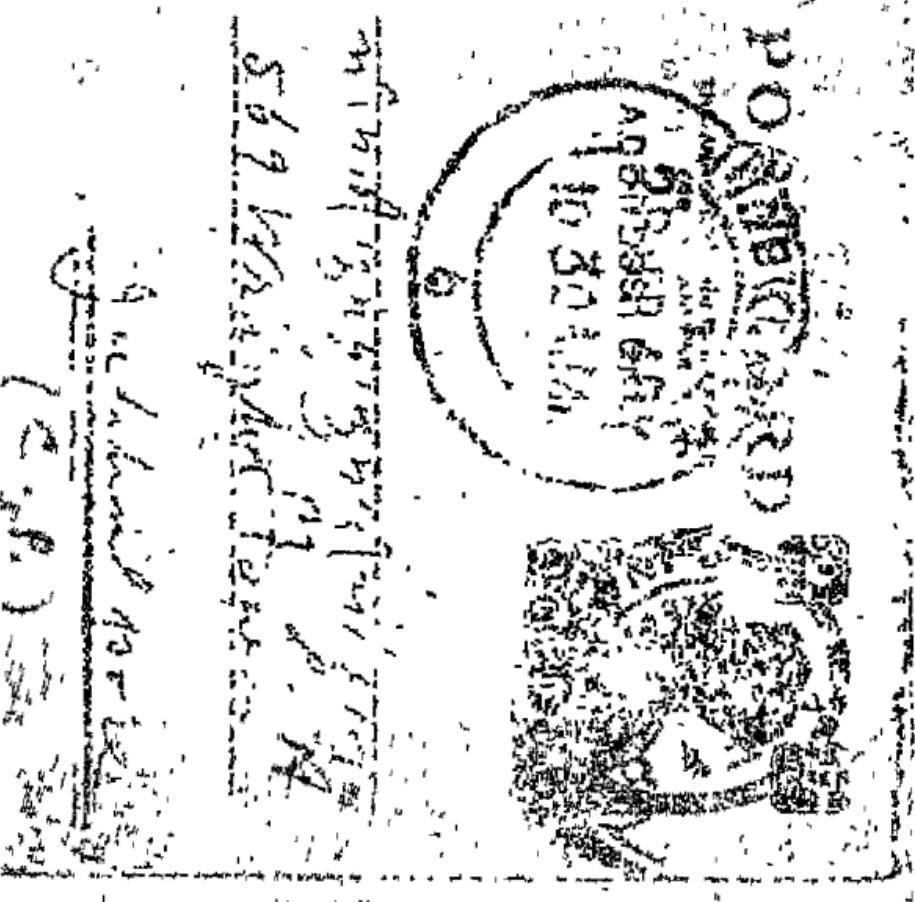
I am really sorry to know  
that you have not been able to  
find your feet yet let me  
hope that the cloth & paint shop  
project will mean some thing  
& will give opportunity to your abilities

Tell dear old Jiji how awfull  
did I feel some times to think that if  
I have not been able to do all I  
could for her. My life, it appears,  
has been a colossal waste. And yet,  
I must plod on my weary way  
without looking back. You, of the  
new generation, are my best  
judges. And I leave it to you to  
pronounce your verdict upon  
me & my — perhaps, aimless, —  
activities. With respect to Rujya  
waranwada, Bhakti & Jiji &  
with love to children & BahuRani,  
remain,

Your affectionate  
Balkrishna

# राष्ट्रीय आनंदोलन





सुभद्रा कुमारी चौहान की पुत्री सुधा अमृत राय  
शुभ विवाह के अवसर पर लिखा गया पत्र



## अनुक्रम

प्रथम प्रकरण / राष्ट्रोप्य आंदोलन

17-76

रायबरेली का हत्याकाण्ड, वही दिन, बलिवेदी की ओर, स्वराज्य या मृत्यु, कस्मै देवाय हविया विधेम ? लेखनी-संत्यास, यह हमारी लज्जा, यह हमारा अभिशाप, आखिर यह पतंगबाजी क्यो ?, जैसे नागनाथ, वैसे मापनाथ, आत्म-निर्णय का सिद्धांत, ये पुराने हथकण्डे और कुछ प्रश्न, यह हमारा प्रदर्शनात्मक क्रातिवाद, भारतीय राष्ट्रीय क्रांति विनाश के चक्रवूह में, के बोले माँ ! तुमि अबले ?, तमझो मा ज्योतिर्गमय, क्या लिखूँ ?

द्वितीय प्रकरण / गौरांग महाप्रभु

77-130

वेवेल आये ! वेवेल आये !! लाई वेवेल की घोषणा, यदि वेवेल-मध्या अमफल हुई तो ?, शिमला-मम्मेलन की वाधाएँ, शिमला-सम्मेलन में निराशा का वातावरण, निष्ठावान देशसेवकों का भय, सावधान ! इस देश में कही आयरलैण्ड के इतिहास की पुनरावृत्ति न हो, निराण होने की आवश्यकता नहीं, पहाड़ को न ताकिये, अपनी ओर देखिये, ब्रिटिश चुनाव-परिणाम, ब्रिटेन का मंतव्य क्या है ?, ब्रिटिश शिष्टमण्डल की योजना, शिष्टमण्डल की योजना, शिष्टमण्डल-योजना का विश्लेषण ।

तृतीय प्रकरण / भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

131-193

क्या कांग्रेस एक क्रांतिकारी संस्था है ?, क्या कांग्रेस-विधान और कांग्रेस-शैली को बदलने की आवश्यकता है ?, यदि कांग्रेस ने पद-ग्रहण किया

तो ? क्या कांग्रेस प्रांतीय शासन सँभाले ?, धौखे-धड़ी के कुतके, यह भ्रम तो दूर ही होना चाहिए, कांग्रेस-कार्य और दलगत कार्य, मुक्त-प्रांतीय कांग्रेस कार्य समिति, प्रांत के कांग्रेसजनों से विनम्र निवेदन, ये चुनाव-चर्चे और कांग्रेस, कांग्रेस-नेतृत्व के विरुद्ध ये विषय उमलने वाले कांग्रेस समाजवादी नेताओं के मदमत्त भाषण, देखें तो आप ध्यान से किंचित् समीप से, इस घर को आग लग रही है घर के ही दीप रो, यही ममय है, कांग्रेस के ध्येय में परिवर्तन कीजिये, कांग्रेस भर जाय अथवा जीवित रहे ?, क्या कांग्रेस को निर्वाण प्राप्त कर लेना चाहिए ?

### चतुर्थ प्रकरण / हिन्दू और हिन्दू महासभा

193-205

हिन्दू महासभा सावधान !, हिन्दू महासभा और हिन्दू जाति में नम्र निवेदन, हिन्दू जाति इन कोडियों की दुर्गम्भ-भरी मतोवृत्ति देते !

### पंचम प्रकरण / मुसलमान बंधु और मुस्लिम लीग

206-218

मुसलमान भाइयों की द्विदमत में, आगामी चुनाव और मुस्लिम-समस्या, मुस्लिम लीग वालों से एक निवेदन, मुसलमान-बंधु भारत राज्य से भागने की क्यों सोचें ?

### षष्ठ प्रकरण / मजदूर-संगठन

219-253

मजदूर-संगठन और कांग्रेस, मजदूरों की समस्याएँ और संगठन कार्य-शैली, मजदूर भाई सावधान हो जायें, देशद्रोहियों की धातक करतूतें, हमारी मजदूर समस्या और उसकी उलझनें, उद्योगपतियों की भेदवा में निवेदन, औद्योगिक क्रांति पुल. कैसे स्थापित हो ?, मजदूर-समस्या और उसका सुलझाव, राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस : एक सामयिक आवश्यकता !

### सप्तम प्रकरण / साम्प्रदायिक सद्भाव

254-264

बांध के !, साम्प्रदायिक दंगों की संभावना, ये साम्प्रदायिक नहीं, ये तो राजनीतिक दंगे हैं, मानव का भेड़िया बन जाना ही क्या कल्पणकर है ?

### अष्टम प्रकरण / साम्यवादी

270-284

हिन्दुस्तान का कम्युनिस्ट दल, उन्होंने उत्तर देश का प्रयत्न किया, काम्यु-निस्टों के हथकण्डे, आपने अपनी अम्मा को पीटना कब से छोड़ दिया ?

**नवम प्रकरण / राजनीतिक समस्याएँ**

285-344

क्या मंत्रिमण्डल बनाना नाभदायक है ?, पाकिस्तान : एक अडगेबाजी, देशद्रोहियों की नीति, आगामी चुनाव की राजनीतिक समस्याएँ, भारतीय राजनीति का प्रवाह, जालीन के जिलाधीश बचपना न करे !, स्वतंत्र भारत मेना और सरकारी नीति, क्या यह निर्बन्ध एवं निष्पक्ष चुनाव है ?, स्पष्ट दर्जन-सामर्थ्य की आवश्यकता, वर्तमान राजनीतिक समस्याएँ और उलझनें, क्या आप-हम-सब अखण्ड भारत में आसथा रखते हैं ?, हिन्दुस्तान-पाकिस्तान-पठानिस्तान, संयुक्त प्रांत को टुकड़े-टुकड़े करने की बात, ये नवाबी के मपने, लार्ड माउण्टबैटन ही वडे लाट क्यों ? प्रांतीय गवर्नरों का प्रश्न, अरणार्थी समूह सावधान रहें : वह अलोकप्रिय न बनें ?

**दशम प्रकरण / खाद्य-समस्या**

345-362

खाद्य-वितरण-योजना सम्बन्धी कुछ विचार, यह नियंत्रण का राक्षस, किसान-संगठन की रूपरेखा कैसी हो, जनाब क्षेत्र-अन्न-नियंत्रक साहब !, यह नियंत्रण है या सीनाजोरी ? प्रादेशिक खाद्य-नियंत्रकों अर्थात् गोजनल फूड-कन्ट्रोलरों की लीलाएँ ।

**एकादश प्रकरण / व्यापार-वाणिज्य**

363-382

क्या विदेशी कपड़ा भारत में आ रहा है ?, हमारे मिलों का रोष, सरकारी हुक्म—गुड मत बनाओ, वस्तुओं के ये बढ़े हुए मूल्य कैसे कम किये जायें ? पाप का धन उगलवाने का प्रयत्न, चोर-व्यापार और चोर-व्यापारी ।

**द्वादश : प्रकरण / विद्यार्थी-समाज**

384-392

अपने वीर विद्यार्थियों से, प्रांत के विद्यार्थी सचेत हो जायें ।



## परिचय - ब्रजसोहन गुप्त “इन्द्रनारायण”

- १४ मार्च, १९३७ ई० (सिहोटा)  
थुकवार, कालगून शुक्ला द्वितीया, १०० गंतव्य १९८५
- ७ जुलाई, १९३७ (शासकीय निकाई अं)
- शेत** ■ काव्यार्थन (पथम काव्य-संवाजन १९७१)
- याँ** ■ एक और यात्रा (द्वितीय काव्य गंतव्य १९८५)
- गद्य कल्प (गद्य-विधाओं का शफला, १९६६)
- विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं ले इन्हाँ परनाम। ना
- आकाशवाणी इन्डियर, भांपाल एवं जगद्वारा न प्रा
- भाद्र** ■ श्री जयशक्ति ‘प्रलाद’ जायमश्वी | इन्हाँ परनाम १९८८
- अवैतनिक सम्पादक—‘बड़ाती विद्यु नामाननदी ना न
- (१९९० से प्रकाशन रथ्यजि.)
- स्मृति** ■ व्याख्याता — कव्या शिक्षा परिषद, फिल्डवाडा,  
आदिम जाति कल्याण पिभाग (भा. ए)
- स्वास** ■ साहित्य कुटीर, गणेश चौक, फिल्डवाडा। इन्हाँ

प्रकाशनाधीन

### द्यजसेली वैश्य जाति निर्माण

(द्यजसेली वैश्य वर्ग का उद्भव तथा विकास, इसी के  
अन्य वैश्य वर्गों का सदिगम परिवर्यात्मक विवरण

